UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.875 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 11, No. 4 April, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

Scanned with OKEN Scanner

PEER REVIEWING EDITORIAL BOARD

- Dr. Susmita Nandi - Assistant Professor, Dept. of Indian Painting, Sanchi University of Buddhist-Indic Studies, Sanchi, Raisen, M.P.
- Dr. Gagandeep - Asst. Prof. of French (Guest Faculty), Panjab University, Chandigarh
- Harpreet Kaur Bains - Assistant Professor of Foreign Languages, PAU, Ludhiana
- Dr. Aruna Kumari - Assistant Professor, Department of Sociology, F.S.S., Baranas Hindu University, Varanasi
- Dr. Abhigyan Dwivedi - Assistant Professor, Department of Linguistics, Dr. Harisingh Gour Central University, Sagar (M.P.)
- Kusum Kumari – Assistant Professor, Home Science, Dr. Ram Manohar Lohiya Govt. Degree College, Muftiganj, Jaunpur (U.P.)
- Dr. Priyankar Agrawal - Guest Lecturer, Dept. of Dharmashastra-Mimansa, Faculty of S.V.D.V., BHU, Varanasi
- Dr. B.L. Gundur - Principal, Bangurnagar Arts, Science and Commerce College, Dandeli, Uttar Kannada, District Karnataka
- Dr. Vinod Kumar Vishwkarma - Assistant Professor, Department of Commerce, School of Commerce & Management, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya (A Central University), Bilaspur, (C.G.)
- Dr. Vibha Shankar - Assistant Professor, Dept. of Hindi, G.L.A. College, Doltonganj, Palamu, Jharkhand
- Dr. Nisha - Assistant Professor, Department of Sociology, Mahatma Gandhi Balika Vidyalaya (P.G.) College, Firozabad
- Dr. Pankaj Kumar 'Niraj' - Assistant Professor, Department of English, Dr. Jagannath Mishra Mahavdyalaya, Muzaffarpur, Bihar
- Dr. Parada Wongsombut - Program in Vocational Education, Faculty of Education, Kasetsart University, Thailand
- Dr. Som Prasad Khatiwada - Associate Professor, Tribhuvan University, Nepal
- Dr. Dinesh Bansilal Patil - Department of Panchakarma, Pune
- Dr. Sarita Rani - Assistant Professor, Department of English, TMU Mooradabad
- Dr. G.V. Satya Sekhar - Asst. Professor, Department of Finance, Visakhapatnam

ADVISORY BOARD

- Prof. Pranam Dhar - Department of Commerce & Management, West Bengal
- Prof. Manisha Panwala - Department of Business & Industrial Management, Veer Narmad South Gujarat University, Surat
- Prof. Y.V.S. Subrahmanya Sarma - D.N.R. College, Bhimavaram

MANAGING DIRECTOR

Mushtaque Ahmad

© Publisher

ISSN 2393-8358
9 772393 835002

Disclaimer : The Peer Reviewing Editorial Board does not necessarily subscribe to opinions and facts expressed in the articles for which the responsibility solely rests with the individual authors.

Scanned with OKEN Scanner

Impact Factor : 6.875
ISSN : 2393-8358

विषय सूची

▸	वैदिक वांग्मय में निहित जीवन मूल्यों का शैक्षिक अनुशीलन **डॉ0 अनिल कुमार एवं डॉ0 देवेन्द्र प्रताप सिंह**	1-4
▸	सिगमंड फ्रायड का समाज में योगदान **डॉ0 दयाशंकर सिंह यादव**	5-10
▸	Sanchi Inscriptions and their Socio-Cultural Significance **Akansha Alankrita Bisen**	11-16
▸	आत्महत्या का मनोविज्ञान **डॉ0 अवधेश रजक**	17-19
▸	उत्तर भारत में कर प्रणालियों का विकास : एक ऐतिहासिक विश्लेषण (पूर्व मध्य काल के विशेष सन्दर्भ में) **प्रो0 राजकुमार गुप्त**	20-22
▸	19वीं–20वीं शताब्दी में सामाजिक–धार्मिक सुधार आन्दोलन **डॉ0 अमित द्विवेदी**	23-24
▸	भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दल **डॉ0 प्रोफेसर आशा राणा एवं अमित कुमार शर्मा**	25-27
▸	आदि शंकराचार्य युगीन भारत की धार्मिक दशा में योगदान **सुरेन्द्र सिंह यादव**	28-30
▸	समकालीन परिप्रेक्ष्य में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के 'सामाजिक–न्याय' पर विचार **डॉ0 पवन पाठक**	31-32
▸	नास्तिक दर्शन का परिणाम **डॉ0 मिताली मीनू**	33
▸	'कंकाल' उपन्यास का सामाजिक एवं तात्विक विश्लेषण **डॉ0 सुषमा साहू**	34-36
▸	भूमंडलीकरण का ग्रामीण हिन्दी कहानियों पर प्रभाव **प्रदीप कुमार साव**	37-42
▸	गतिविधि आधारित शिक्षण, ICT के प्रयोग व सकारात्मकता से विद्यार्थियों में बढ़ता आत्मविश्वास **कौशल किशोर**	43-45
▸	Agricultural Labour Migration and its Impact on Rural Areas of Bihar **Dr. Ramchandra Prasad Singh & Abhishek Anand**	46-52
▸	शिवपूजन सहाय के 'देहाती दुनिया' में ग्राम्य चेतना **श्रुति सिन्हा**	53-56
▸	विनोबा और भूदान आन्दोलन : लक्ष्य एवं दर्शन **निमिषा राज**	57-59
▸	सिद्धार्थनगर जनपद (उ0प्र0) की जनांकिकीय विशेषतायें **परमानन्द**	60-66

Scanned with OKEN Scanner

▸	कृष्णा सोबती की कहानियाँ : शैलीगत परिप्रेक्ष्य **श्वेता सिंह**	67-70
▸	बाढ़ के प्रभाव और इसका प्रबंधन **डॉ0 प्रभाकर कुमार**	71-77
▸	बदलापुर विकासखण्ड (जनपद जौनपुर) में जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का भौगोलिक अध्ययन **डॉ0 ओमप्रकाश यादव**	78-82
▸	Yoga and Mental Health **Dr. Rekha Srivastava, Dr. Payoli & Mr. Rajeev Kumar**	83-88
▸	Autonomous Electric Vehicle **Raghav Chandak, Prem Kumar Sharma, Pushpak Raj & Arnab Das**	89-96
▸	The Automatic Replaceable Car Covering (ARCC) using IOT **Sahil Verma, Kajal Mishra, Devvardhan Singh, Nimit Jain, Laxman Singh & Dr. Sanjay Kumar Sinha**	97-101
▸	पूर्ववर्ती परंपरा में योग–साधना **डॉ0 तुलाराम शर्मा**	102-106
▸	डॉ0 अम्बेडकर के राजनीतिक विचार **डॉ0 संजय कुमार रजक**	107-110
▸	तीर्थानां त्रिविधस्वरूपम् **प्राची प्रभा**	111-114
▸	Unleashing the Power of Motivation: A Key to Success **Dr. Ranjana Pandey**	115-119
▸	बैरम खाँ के संरक्षण में विजारत विभाग **प्रो0 (डॉ0) अशोक कुमार सिन्हा एवं विकास कुमार**	120-122
▸	Understanding Mutual Complementarily of ICTS and Social Capital: An Overview of Researches **Dr. Manushi**	123-128
▸	Watershed Management in Palamu, Jharkhand **Sukirty Kumari**	129-130
▸	हिन्दी साहित्य और किसान जीवन **डॉ0 नीतू सिंह**	131-135
▸	हिन्दी के आदिवासी उपन्यासों में नारी–विमर्श **डॉ0 ज्योतीश्वर मिश्र एवं अशोक कुमार यादव**	136-138
▸	विवेकानन्द के चिन्तन का दार्शनिक आधार : एक अध्ययन **संजय सिंह यादव**	139-140
▸	ग्रामीण विकास में सूक्ष्म वित्त की भूमिका **वेद प्रकाश दुबे**	141-144
▸	शिक्षा एवं सरकारी योजना से अनुसूचित जातियों के उद्यमियों में बढ़ते अवसर **शैलेन्द्र कटारे एवं डॉ. अखिल कुमार दुबे**	145-150

Scanned with OKEN Scanner

▸	यतश्च निर्धारणम् सूत्रमीमांसा **प्रवीण कुमार आर्य**	151-153
▸	छठीं शताब्दी ई०पू० में प्राचीन भारत में समाजार्थिक परिवर्तन **सुमित्रा नन्द श्रीवास्तव**	154-156
▸	Legal Implications of Non-Compliance with Biomedical Waste Management Legislations in India, United States of America and European Union **Prof. (Dr.) Yogendra Kumar Verma**	157-164
▸	जनसंख्या वृद्धि पर्यावरण के लिए एक चुनौती **डॉ० मनोज कुमार सिंह**	165-168
▸	ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में लघु एवं कुटीर उद्योग की भूमिका **चन्दा देवी**	169-172
▸	राँची जनपद के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक सन्तुष्टि का अध्ययन **डॉ० एस०पी० यादव एवं सरिता कुमारी**	173-174
▸	बालाघाट जिले के अनुसूचित जातियों के सामाजिक सशक्तिकरण का एक अध्ययन **सुषमा मेश्राम एवं डॉ० कौशलेन्द्र शर्मा**	175-178
▸	सतना जिले की अनुसूचित जातियों का सामाजिक–आर्थिक अध्ययन **अशोक कुमार चौधरी एवं डॉ० धनराज डोंगरे**	179-182

Scanned with OKEN Scanner

जनसंख्या वृद्धि पर्यावरण के लिए एक चुनौती

डॉ0 मनोज कुमार सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजा हरपाल सिंह पी0जी0 कालेज, सिंगरामऊ–जौनपुर

प्रकृति ही मानव का पर्यावरण और यही उसके संसाधनों का भण्डार है। आज मानव प्रकृति की गोद में पलकर अज्ञानतावश अपनी विज्ञान यांत्रिकी जानकारी से पर्यायवरणीय संसाधनों के अतिशय दोहन में लिप्त है। पिछले 25 वर्षों से पारिस्थितिकीविदों ने समझने और समझाने का अथक प्रयास किया है कि काल स्थान की सीमाओं में हमारे संसाधन असीमित नहीं है। अति उपभोग सभ्यता में औद्योगिक उत्पादन प्राकृतिक संसाधनों और ऊर्जा स्रोत भण्डारों पर आधारित है जो दोनों निश्चय ही त्वरित गति से क्षीण हो रहे हैं। इस प्रक्रिया में संसाधनों द्वारा ही निर्मित जीवपोषी तन्त्र संकीर्ण, दूषित और विषाक्त होते जा रहे हैं। विज्ञान ने हमें दो विकल्पों के चौराहे पर खड़ा कर दिया है। एक तो विवेक, मितव्यय और नैतिकता का लम्बा रास्ता, दूसरा भोग विलास का जिस पर पर्यायवरण तथा मानव जाति का शीघ्र ही सर्वनाश निश्चित है।

महात्मा गाँधी ने सत्य अहिंसा तथा अपरिग्रह पर आश्रित एक नए धर्म और नैतिकता को जन्म दिया था, इसमें पर्यावरण का संतुलन केन्द्रित था। संसाधनों का बंटवारा न्यायपूर्ण था, और प्राणी मात्र के लिये प्रेम था। चर्खे ने मिलों को चुनौती दी थी। ऊर्जा प्रवाह तथा पदार्थ संचरण उसमें नियंत्रित था। विडम्बना तो यह है कि पाश्चात्य देशों में जैसे गाँधीजी को याद कर रहे है वैसे ही भारतवासी उन्हें और उन्हें दर्शाये मार्ग को भूलते जा रहे है।

पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है हमारे चारों ओर छाया आवरण (परि + आवरण = पर्यावरण) जीवन और पर्यावरण में अटूट सम्बन्ध है। प्रकृति में जल, वायु, भूमि पेड़–पौधों, जीव–जन्तुओं आदि में एक संतुलन कायम है। यह संतुलन ही प्राणी के अस्तित्व का आधार है।

बेबस्टर शब्दकोश के अनुसार–"पर्यावरण से अभिप्राय उन घेरे रहने वाले परिस्थितियों, प्रभावों एवं शक्तियों से है जो प्राकृतिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशाओं के समूह द्वारा व्यक्ति अथवा समुदाय के जीवन को प्रभावित करता है।"

प्राकृतिक संसाधनों के बाद आर्थिक पर्यावरण को प्रभावित करने वाला दूसरा महत्वपूर्ण घटक मानव संसाधन है। जनसंख्या आर्थिक गतिविधियों का साधन और साध्य दोनों होती है। जनसंख्या में गुणात्मक वृद्धि का आर्थिक पर्यावरण पर अनुकूल तथा संख्यात्मक वृद्धि का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। भारत में मानव संसाधन आर्थिक विकास में अवरोध सिद्ध हुआ है। यद्यपि जनाधिक्य के कारण भारत दुनिया के बड़े बाजार के रूप में उभरा है। सस्ती श्रम शक्ति के कारण विदेशी निवेशकों का आकर्षण बढ़ रहा है, किन्तु जनसंख्या की बहुलता से अनेक समस्याएं यथा गरीबी, बेरोजगारी, पिछड़ापन मुखर हो गई है। आर्थिक प्रगति जनसंख्या रूपी बाढ़ में बह जाती है।

"आज भारत की स्थिति उस पिता की भांति हो गई है जिसके पास आवास और सुविधाओं का अभाव है, और बहुत सारे मेहमान आ गए है और ऐसी स्थिति में वह किंकर्तव्यविमूढ़" की स्थिति में आ जाता है। भारत में बढ़ती जनसंख्या के सम्बन्ध में एक पंक्ति का उल्लेख किया जाना समीचीन है–"परवरिश नही हम कर पाए फूलों की, घर में फुलवारी लगाना गलती है।"

पर्यावरण–प्रदूषण से तात्पर्य वातावरण के भौतिक, रासायनिक, जैविक अवस्था में ऐसा परिवर्तन जिससे मानव जानवर वनस्पति अथवा नैसर्गिक प्रतीकों को हानि पहुँचे। प्रदूषण का अर्थ होगा मानव अभिप्रेरत ऐसे परिवर्तन जिनसे प्राकृतिक वातावरण की गुणवत्ता का ह्रास हो। जीवन या प्राणियों के लिए अनिष्ट कारक कतिपय बाह्य पदार्थों के पर्यावरण में समावेश को प्रदूषण कहते है।

राजीव गांधी ने कहा था–"गरीबी और डर से तनाव और संघर्ष पैदा होते है और अवकृष्ट पर्यावरण जिनमें गरीबी और डर तत्रस्थ है सदैव अनर्थपूर्ण और संकटमय हो सकता है।"

वर्तमान में आर्थिक विकास के फलस्वरूप औद्योगिकरण, नगरीकरण, वनों का विनाश एवं प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध दोहन हो रहा है। इसके फलस्वरूप मानव एवं प्रकृतिक के मध्य स्थापित संतुललन बिगड़ गया है। आधुनिकता, विकास एवं सभ्यता की अंधी दौड़ में दौड़ रहे वर्तमान सभ्य समाज ने कुछ ऐसे कार्य हैं जो मानव की नजर में विकास का प्रतीक है, परन्तु इसके लिए एक निर्णय आत्मघाती सिद्ध हुए हैं, जो पर्यावरण गुणवत्ता के ह्रास के प्रमुख कारण हैं। सभी पर्यावरणीय समस्याओं का सूक्ष्म अध्ययन करें तो

Scanned with OKEN Scanner

इनमें केन्द्रीय समस्या अनेक जनसंख्या वृद्धि की है जिनमें समस्याएं जन्म लेती हैं, जैसे बेरोजगारी, अशिक्षा, खाद्यान्न की कमी, गरीबी, ऋण, महंगाई, असमान वितरण, क्रय शकित की कमी, बाल श्रम को बढ़ावा, चिकित्सा सुविधा का अभाव एवं बीमारी का आधिक्य, पौष्टिक भोजन का अभाव आदि। पर्यावरण और जनसंख्या का प्रत्यक्ष सम्बन्ध हैं।

हम प्रकृति की संतान हैं स्वामी नहीं–"मानव सभ्य हो या बर्बर, प्रकृति की संतान है उसका स्वामी नहीं। यदि उसे अपने पर्यायवरण पर प्रभुत्व बनाए रखना है तो उसके लिए कपितय प्राकृतिक नियमों के अनुसार चलना आवश्यकता है। वह जब प्रकृति के नियमों का उल्लंघन करता है तभी वह उस प्राकृतिक पर्यावरण को नष्ट कर बैठता है जिस पर उसका अपना जीवन निर्भर है और जब उसका पर्यावरण तेजी से बिगड़ने लगता है, तब उसकी सभ्यता का पतन भी होने लगता है।"

पर्यावरण और सभ्यता–प्रो0 ई0एफ0 शुमाखर ने ठीक ही कहा है–"अपनी वैज्ञानिक व तकनीकी शक्ति के मुखरित होने के उत्साह में आधुनिक मानव ने उत्पादन की ऐसी प्रणाली का निर्माण कर लिया है जो प्रकृति के साथ अनाचार करती है और ऐसे समाज की रचना कर ली जो मनुष्य को विकृत करती है।"

उच्छंकल विज्ञान और हिंसक प्रौद्योगिकी के जरिए औद्योगिक मानव ने प्रकृति पर आधिपत्य जमाने की सोची। उसके विध्वंसक दुष्परिणाम आज सामने हैं। पर्यावरण प्रदूषण का जहर घुलता जा रहा है, पारिस्थितिक असंतुलन बढ़ता जा रहा है समूचा परिवेश दमघोटू हो चला है।

औद्योगिक मानव ने प्रकृति की सौम्यता सदाशयत्न और सुन्दरता के साथ खिलवाड़ किया है।

गाँधीजी की दृष्टि में–"यह धरती अपने प्रत्येक निवासी की आवश्यकता को पूरा करने के लिए यथेष्ट साधन उपलब्ध करती है, लेकिन हर व्यक्ति के लालच की पूर्ति नहीं कर सकती।"

पर्यावरण का मानव प्रभाव के सम्बन्ध में स्व0 श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा था।"आधुनिक युद्ध जैसी बेतुकी बात और कोई नहीं हो सकती। भयंकर हथियार जितनी शीघ्रता से विनाश करते हैं, उतनी शीघ्रता से और कोई हथियार कार्य नहीं करता क्योंकि ये भयंकर हथियार न केवल मारते हैं, बल्कि जीवित अजन्मे शिशुओं को भी जीवित रहते हुए मार देते हैं, विकृत और अपंग कर देते हैं यह भूमि को विषाक्त कर देते हैं। कुरूपता, अनउर्वरता, बंजरता का लम्बा सिलसिला अपने पीछे स्थायी तौर पर छोड़ देते हैं।"

मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण–मानव का स्वास्थ्य स्वच्छ एवं संतुलित पर्यावरण पर निर्भर है। विगत शताब्दी में मानवीय गतिविधियों के पर्यावरण पर तीव्रता से प्रहार के कारण पर्यावरण असंतुलित हो गया है। भूमि संसाधन, वन संसाधन, जल संसाधन, कोयला एवं पेट्रोलियम का युद्ध स्तर पर दोहन करने से एक ओर इनकी घटती मात्रा द्वारा पर्यावरण संतुलन बिगड़ गया और दूसरी ओर इनसे पर्यावरणीय गुणवत्ता में ह्रास हुआ है जिस पर प्रत्यक्षतः मानव स्वास्थ्य निर्भर है। इस प्रकार मानव जीवन पूर्णता पर्यावरणीयतन्त्र से सम्बद्ध है।

पर्यावरण एवं मानव अधिकार–अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में प्रधान न्यायमूर्ति डॉ0 नगेन्द्र सिंह का मत है–"सुरक्षित एवं पर्याप्त वातावरण में शांतिपूर्ण ढंग से मानव को रहने का अधिकार है जो उसके मूलभूत अस्तित्व से सम्बन्धित है। ऐसे स्थिति में जो मानव के अपने अस्तित्व का मूलभूत करण है, उसे निःसन्देश मौलिक अधिकार की श्रेणी में रख जाना चाहिए या मौलिक अधिकार का नाम दिया जाना चाहिए।

औद्योगिक संस्कृतिक और बढ़ती आबादी –प्रो0 गुन्नार मिर्डल ठीक ही कहते हैं कि –"पश्चिमी राष्ट्र अपव्यय–प्रदूषण और धरती के संसाधनों के अन्धाधुन्ध दोहन की भयानक कीमत पर ही अपने जीवन यापन का स्तर ऊँचा बनाए रख पा रहे हैं।

जनसंख्या वृद्धि कर विस्फोटक स्थिति पारिस्थितिक संतुलन के लिए एक चुनौती है। विश्व की जनसंख्या इन शताब्दी के अन्त तक लगभग दुगुनी होने की संभावना है।

प्रो0 हिपल के अनुसार – "एक राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति उसकी भूमि, जल, वनों, खानों पशु, संपत्ति या डालरों में निहित न होकर उस राष्ट्र के धनी और प्रसन्न जन समुदाय में निहित होती है।"

पर्यावरण के आधार पर पृथ्वी पर निश्चित सीमा तक ही भार सहन कर सकती है। जनसंख्या वृद्धि से पृथ्वी पर भी भार बढ़ रहा है ऐसा माना जाता है पृथ्वी 15 अरब जनसंख्या समूह तक का भार सहन कर सकती है।

भारत के पर्यावरण विज्ञान क`जनक प्रो0 रामदेव मिश्र–लोग परिस्थितिकीविदों से पूछते हैं कि क्या हम स्वच्छ और अच्छे जीवन के लिए पाषाण युग में चले जाएं? क्या विज्ञान, तकनीकी तथा सामाजिक विकास को हम तिलांजली दे दें? सामाधान पीछे जाने में नहीं है। हमें पर्यावरण की रक्षा करनी है। स्वस्थ पर्यावरण ही विकास है, फिर वह जैसे भी हो।

Scanned with OKEN Scanner

ऊर्जा प्रवाह और पदार्थों का संचारण, प्रकृति परितंत्रों के अनुसार सामाजिक सेवा में इस धारण से लगाना है कि पर्यावरण से उधार ली हुई चीजें फिर उसे वापस कर देनी हैं। हमारा कल्याण तब तक नहीं हो पाएगा जब तक हमारे अर्थ और विज्ञान नैतिकता का सहारा नहीं लेंगे। एक नई सभ्यता का विकास करना है जिसमें व्यक्ति, समाज भौतिक तथा जैविक संसाधन उन्नत किये जा सकें।"

जनसंख्या नियंत्रण एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु सुझाव

1. परिवार कल्याण कार्यक्रम का प्रचार प्रसार कर उसे लोकप्रिय बनाना।
2. मातृदर दर में कमी लाना तथा महिला शिक्षा पर बल देना।
3. अधिक जनसंख्या वाले राज्यों में क्षेत्रीय जनसंख्या नीति का अलग–अलग निर्धारण करना।
4. जनसंख्या वृद्धि के खतरों से समाज को अवगत कराना।
5. अधिक उम्र में विवाह करने हेतु कानून बनाना।
6. चीन की भांति एक बच्चे वाले परिवार का सरकारी सहायता प्रदान करने हेतु कानून बनाना।
7. पर्यावरण शिक्षा का प्रचार–प्रसार का जनमानस को जाग्रत करना।
8. प्रदूषण से होने वाली बीमारियां एवं उसके दुष्प्रभाव से जनमानस को अवगत कराना।
9. जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण से बचाव के सुरक्षा उपकरणों के प्रयोग की सलाह देना।
10. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान देना।
11. जगलों की कटाई से होने वाली हानि से मानव को अवगत कराना तथा पर्यावरण संरक्षण के दायित्व का निर्वाह करने हेतु जनमानस को तैयार करना।
12. उद्योगो से निकलने वाले प्रदूषणकारी अवाशेष्टों का समुचित उपचार एवं समापन करवाना।

प्रख्यात गांधीवादी वैज्ञानिक डॉ0 आत्माराम ने कहा– "जिन्दगी में रहन–सहन में सादगी आए तो फिजूल की चीजें बनाने वाले कारखानें कम होगें और उनसे पैदा होने वाला प्रदूषण भी कम होगा। मुट्ठी भर लोगों को सफल ऐश्वर्य उपलब्ध कराने की बजाए सबको रोटी, कपड़ा मकान और पीने का पानी दिलवाना हमारा लक्ष्य हो तो हम प्रकृति को कम से कम पीड़ित करते हुए प्रगति कर सकेंगे।"

हेलमुट कोल के अनुसार–"आज अर्न्तराष्ट्रीय समुदाय भूमण्डलीय पर्यावरणीय संरक्षण के क्षेत्र में मूलतः बढ़ते हुए सहयोग के प्रति केन्द्रीय चुनौती से पूर्णतः सजग है। पृथ्वी के वायुमण्डल में परिवर्तन जिसका कुप्रभाव जलवायु पर भी पड़ता है, उष्ण कटिबन्धीय वर्षा का निरन्तर क्षय ओजोन परत का विध्वंश और विभिन्न जातियों का लोप ये सब प्रकृति और महाद्वीपों में मानव जाति के लिए खतरा पैदा करते हैं, जिनसे हम चिन्तित हैं जो विश्व हमें सौपा गया है उसके संरक्षण के लिए अपने पुत्रों–पौत्रों–प्रपौत्रों आदि के जीवन और स्वास्थ्य के लिए हम चिन्तित हैं। इसी कारण हम विश्वव्यापी पर्यावरणिक भागीदारी चाहते हैं।"

पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में 1989 में टोरेन्टों सम्मेलन को संबोधित करते हुए वहाँ के प्रधानमंत्री ने कहा था–"हम प्रकृति के साथ बहुत खतरनाक खेल खेल चुके हैं। अब समय आ गया है कि हम अपनी मानसिकता में परिवर्तन लाएं। मानव विकास और पर्यावरण ये तीन सहजीवी हैं और इनके पारस्परिक संबंधों को ही पारिस्थितिकी संतुलन कहा जाता है। इनमें से किसी एक के द्वारा दूसरे के क्षेत्र में अतिक्रमण या अवलंघन से पर्यावरणीय प्रदूषण और पारिस्थितिक असंतुलन हो जाता है। उचित ही कहा गया है – कि संसार को कैंसर हो गया है और वह कैंसर है मनुष्य। मनुष्य ही है जो अपने स्वार्थ साधन के लिए इस संतुलन को बिगाड़ता है क्योंकि शक्ति, अधिकार और धन अर्जन की उत्कट इच्छा और प्रबल लालसा और सुखमय जीवन व्यतीत करने की उसकी व्यग्रता और उत्कण्ठा के कारण ही पर्यावरण में असंतुलन होता है।

हमें अपने आर्थिक और सामाजिक विस्तार में मौलिक परिवर्तन करना पड़ेगा। प्रकृति का संतुलन धीरे–धीरे स्थापित होता है किन्तु हम इस बात पर ध्यान न रखते हुए तेजी से प्रदूषणों द्वारा वातावरण को विषाक्त करते रहे तो अपने लिए संकट ही उत्पन्न कर लेंगे।

अगले पचास सौ वर्षों में अंतरिक्ष में वायुयान इतने उड़ेंगे कि 20–30 हजार फुट की ऊँचाई तक का वातावरण विषाक्त हो जाएगा। प्रदूषण को दूर करने के साधन तो सोचने ही चाहिए पर इससे भी अधिक आवश्यक है कि जिन विधियों के उपयोग से प्रदूषण उत्पन्न होते हों, उन्हें ही मूलतः समाप्त किया जाए इसलिए अब हमें सभ्यता और संस्कृति के विकास को कोई नया रूप देना होगा। हमने स्वयं प्रदूषण नामक महादानव को जन्म दिया और यह दानव हमें त्रस्त करने की बाट जोह रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची एवं पत्रिकाएँ

1. दि इकोनॉमिक टाइम्स, नई दिल्ली, 20 जून, 1999।

Scanned with OKEN Scanner

2. इण्डियन इकानॉमिक सर्वे, 1989–19, एस–12।
3. राजस्थान पत्रिका, 7 जुलाई, 1999।
4. इण्डियन इकानॉमिक सर्वे, 1998–99।
5. गोपीनाथ श्रीवास्तव, पर्यावरण प्रदूषण।
6. शुकदेव प्रसाद, पर्यावरण और हम।
7. राजस्थान पत्रिका, 9 जुलाई, 1999।
8. प्रेमानन्द चन्दाला, पर्यावरण और जीव।
9. प्रो० धनन्जय वर्मा, पर्यावरण चेतना।
10. डॉ० एस०एस० पुरोहित, डॉ० पी०सी० देव, डॉ० अशोक के० अग्रवाल पर्यावरण अध्ययन।
11. डॉ० रामकुमार गुर्जर, डॉ० बी०सी० जाट, पर्यावरण अध्ययन।
12. डॉ० ओ०पी० शर्मा, पर्यावरण शिक्षा।
13. डॉ० एस०एस० शर्मा, पर्यावरण शिक्षा।
14. डॉ० आर०डी० गुप्ता, डॉ० के०पी० सिंह, पर्यावरणीय अध्ययन।
15. श्याम सुन्दर शर्मा, सागर प्रदूषण।